मानवीय संवेदनाओं से प्रेरित गीता डोगरा और डॉ. चन्द्र त्रिखा की कविताएं

डॉ. आर.पी. वर्मा
असि. प्रो एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

नई कविता भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात लिखी गई उन काव्यकृतियों की संज्ञा है जो अपनी वस्तु–छवि और रूप–छवि में छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद से भिन्न है। नई कविता के प्रायः वही कवि हैं जो प्रयोगवाद के भी किन्तु देखा जाए तो उनके काव्य और जीवन के प्रति दृष्टिकोण मे अन्तर है। सन् 1950 से नई कविता के स्वरों की अनुगूँज सुनाई पड़ती है। सन् 60 के बाद की कविता को कुछ विद्वान 'साठोत्तरी' अकविता सजग कविता, अति कविता आदि न जाने कितने नाम देते रहे हैं, किन्तु नई कविता नाम ही अधिक प्रचलित हुआ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय जनता का हृदय उल्लास से भर उठा, अनेक योजनाओं के आकर्षक रूप दिखाए गए। लेकिन सन् 1962 में चीन ने भारत पर जब आक्रमण किया तो शान्ति के सिद्धान्तों की हत्या हुई। सन् 1965 से 1971 के बीच देश को युद्धों का भी सामना करना पड़ा। भारतीय स्वाधीनता ने जनता को राजनैतिक भ्रष्टाचार, गरीबी, महंगाई, बेकारी, घूसखोरी और अराजकता के अतिरिक्त कुछ न दिया। इसी हेतु युवा पीढ़ी इन परिस्थितियों से रूब–रू–होकर कहीं–न–कहीं विद्रोही बन गई। इन्हीं परिस्थितियों में नई कविता का विकास हुआ। डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में– "नई कविता भारतीय स्वतन्त्रता के बाद लिखी गई उन कविताओं को कहा गया जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नए मूल्यों और नए शिल्प–विधानों का अन्वेषण किया गया। यह अन्वेषण साहित्य में कोई नई वस्तु नहीं है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो प्रायः सभी नए वाद या नई–नई धाराएं अपने पूर्ववर्ती वादों या धाराओं की तुलना में कुछ नवीन अन्वेषण की प्यास लिए दिखाई पड़ती है। नई कविता की अपनी विकास यात्रा सन् 1943 में अज्ञेय द्वारा प्रकाशित 'तार सप्तक' से शुरू होती है। नई कविता के कवि तीन चरणों में विभक्त है। प्रथम चरण की नई कविता में मुख्यतः वही कवि हैं 'तार सप्तक' में जिनकी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। इन काव्य–कृतियों में राजनीतिक व्यंग्य, आस्था, आशा और आत्म–विश्वास देखने को मिलता है। दूसरे चरण में कवियों की कृतियों में विद्रोह, विसंगति, आक्रोश, अकुलाहट की अभिव्यक्ति है। तीसरे चरण में पहुंचकर कविता भिन्न–भिन्न दिशाओं में मुड़ती है। यहां लगता है नई कविता विघटन की स्थिति में आ गई है। किन्तु वास्तव में यह तो उसके विकास की स्थिति है। आज की कविता नई कविता के उस स्वर का विकास है जो आज की रोज़मर्रा जिन्दगी की अनुभूतियों को बड़ी सहजता से अभिव्यक्ति देता है। आज की कविता में भय, ऊब, आतंक, तनाव और अकेलेपन का बोध छाने लगा है। ऊब, तनाव, आतंकवाद और अकेलापन देखा जाए तो यह कहीं–न–कहीं शहरों, महानगरीय सभ्यता में अधिक दिखाई देता है। समकालीन कवियों में डॉ. चन्द्र त्रिखा और गीता डोगरा ने इन्हीं विषयों को आधार बनाकर अपनी काव्य–कृतियों की सर्जना

की है। 'कच्चे रंग' शीर्षक कविता कवियित्री की अत्यन्त मर्मस्पर्शी रचना है। शहरी जीवन की दौड़–धूप में वह बदलते परिवेश की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहती हैं कि गाँव खो जाने पर अब शहर, उसकी सड़कें और गलियां ही रह गई हैं। गाँव के साथ–साथ वे पर्वत भी खो गए हैं जो उसे खामोशी से आवाज़ देते थे। तब वह थकी–हारी धूल भरे पांव लेकर उसकी गोद में सिमट जाती थी। उसे लगता है कि इस भौतिकवादी परिवेश में वह अपने अतीत को खो बैठी है। कवियित्री नगरीय सभ्यता की चर्चा करती हुई कहती है कि शहरों में तो सीमेंट, पत्थर का अर्थात संवेदनाहीन आदमी रहता है जो रिश्तों को स्वार्थ के तराजू पर तोलता है और उस पर पूरा न उतरने पर वह रिश्तों को पटक देता है तभी वह कहती है :

वे रिश्ते भी खो गए
अब रहता है वहाँ भी
सीमेंट पत्थर का आदमी

जो रिश्तों को तराजू पर
तोलता है
और पटक देता है
छितरे–छितरे हो
मैं वहाँ से भी लौट आई।

कवियित्री गीता डोगरा वर्तमान परिवेश में बदलते जीवन मूल्यों पर चिन्ता व्यक्त करती हैं कि वह अतीत से तो पूरी तरह कट चुकी है और फिक्र है कि कहीं उसका भविष्य भी वर्तमान से कट न जाए। कहीं उसकी अपनी बेटी भी इस संवेदनाशून्य वातावरण से हताश होकर लौट न जाए। इस तनावपूर्ण स्थिति में वह कहती हैं :

और सोचती हूँ
गलती से जन न बैठूँ
कोई सीमेंट पत्थर का आदमी
कि कहीं
मेरी बेटी भी छितरे–छितरे हो
लौट जाए
मेरी दहलीज से
सच कितना डरती हूँ मैं।

अतः कवियित्री गीता डोगरा ने नगरीय सभ्यता की संवेदन शून्यता पर व्यंग्य किया है।

मानवीय संवेदनाओं के आईने में डॉ. त्रिखा

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, दुराचार, अलगाव, नैतिक मूल्यों का विघटन, आतंक आदि विषय डॉ. त्रिखा की काव्य–कृतियों की सर्जना के हेतु बने हैं। 'काली नदी' कविता डॉ. त्रिखा की आतंकवाद से सम्बन्धित रचना है। इस कृति के माध्यम से उन्होंने मानवीय संवेदनाओं को जगाने का प्रयास किया है। 'काली नदी' वह आतंक है जिसके कारण देश की व्यवस्था चरमरा रही है। कवि का कथन है :

ज़िन्दगी बन्दूक की गोली नहीं है
ज़िन्दगी आतंक का दर्पण नहीं है
ज़िन्दगी मासूम से, उड़ते परिंदे की
रगों में कैद धड़कन है।

पंजाब में आतंक से सकून मिलने के पश्चात पटरी पर लौटती जिन्दगी का चित्र जो डॉ. त्रिखा ने खींचा है, ऐसा मार्मिक चित्र अन्यत्र मिलना कठिन है। आशावान होते हुए कवि का कहना है :

यारो कुछ तो वक्त लगेगा
धीरे–धीरे घाव भरेगा।
अभी रूह में सन्नाटा है
अभी परिंदा पर तोलेगा

सहमा–सहमा सा मौसम है
धीरे–धीरे फूल खिलेगा
भंगड़ा गिद्दा भूल गये थे
हौले–हौले पांव खुलेगा।

यह सच है कि समाज में कई प्रकार की विसंगतियां हैं, किन्तु कवि निराशावादी न होकर आशावादी है। 'जीने को कुछ मानी दे' कविता में डॉ. त्रिखा जीवन को नए अर्थ प्रदान करने की कामना करता है। वह कुछ ऐसे तूफानी क्षण मांगता है जिससे जीवन में एक नया परिवर्तन आ सके। वह संसार के दुखों को समाप्त करने के लिए सातों समुन्दरों का पानी मांग रहा है तथा अपने मन की व्यथा को मिटाने के लिए कोई पुरानी गज़ल माँगता है ताकि उसे गाकर वह अपने मन की व्यथा को अभिव्यक्त कर सके। जीवन को सार्थक बनाने हेतु वह कहता है :

जीने को कुछ मानी दे
ऐसी एक कहानी दे
सात समन्दर लेकर आ
प्यासा हूँ कुछ पानी दे।
धूप अभी तक नंगी है
इसको चूनर धानी दे।
भीगा है मन गाएगा।
कोई गज़ल पुरानी दे।
दे कुछ तू रब्ब जैसा है
लम्बें कुछ तूफानी दे।

'मानव विरोधी शक्तियों के खिलाफ कविताएं' लेख के अन्तर्गत डॉ. यश गुलाटी का कहना है, "क्या यह महज संयोग ही है कि त्रिखा जी की रचनाएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कि वे अपने रचनाकाल में थी। समय की अंगुलियों के दागों से मटमैली होने की बजाय वे आतंकवाद के मौजूदा घटाटोप में अपनी उपस्थिति की तरफ ज्यादा ध्यान आकृष्ट करती हैं। यह महज आतंकवाद की दुनिया की सबसे चर्चित मुद्दा बन जाने के कारण नहीं बल्कि उनकी रचना में निहित देशकाल की परिधि का अतिक्रमण करने की क्षमता की वजह से भी हुआ है।"

संदर्भ

- ✓ हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र, पृ. 625
- ✓ दोस्तो अब परदा गिराओ–डॉ. चन्द्र त्रिखा, पृ. 55
- ✓ वही, पृ. 55
- ✓ वही, पृ. 30
- ✓ वही, पृ. 31
- ✓ वही, पृ. 17
- ✓ समकालीनता के अर्थों में हिंदी कविता–संपादक प्रो. (डॉ.) सुखदेव सिंह मिनहास पृ. 240
- ✓ मानवीय संवेदनाओं से प्रेरित डोगरा और डॉ. चन्द्र त्रिखा की कविताएं–डॉ. शशि किरण, पृ. 27

Copyright © 2017, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.